NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

मूली की खेती से सम्बंधित जानकारी

विशाल पाल[*1], कुमारी नेहा सिन्हा[2] एवं मिथिलेश कुमार वर्मा[3]

परिचय:

मूली (Radish) एक महत्वपूर्ण जड़वाली सब्जी है, जिसका वैज्ञानिक नाम *Raphanus sativus L.* है और यह *Cruciferae (Brassicaceae)* कुल से संबंधित है। मूली विश्वभर में उगाई जाने वाली एक प्रमुख जड़ वाली सब्जी है, जो स्वाद, औषधीय गुणों और पोषण मूल्य के कारण लोगों के बीच लोकप्रिय है। भारत में मूली का उपयोग सलाद, सब्जी, अचार और पराठे के रूप में व्यापक स्तर पर किया जाता है। यह विटामिन–सी, कैल्शियम, फास्फोरस, रेशा और अन्य खनिजों का उत्तम स्रोत है। इसकी जड़ और पत्तियाँ दोनों ही पोषण से भरपूर होती हैं।

जलवायु

मूली एक शीतकालीन फसल है और इसका सफल उत्पादन समशीतोष्ण तथा उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में किया जा सकता है। मूली की अच्छी वृद्धि के लिए 10–25 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त होता है। अधिक तापमान में इसकी जड़ों में तीखापन और रेशेदारपन बढ़ जाता है। ठंडी जलवायु में मूली की जड़ कोमल, सफेद और स्वादिष्ट होती है।

मृदा

मूली की खेती के लिए हल्की, रेतीली दोमट या दोमट मिट्टी सर्वोत्तम रहती है। भारी चिकनी मिट्टी में जड़ें टेढ़ी-मेढ़ी बन जाती हैं। मूली की जड़ों के अच्छे विकास के लिए मिट्टी का pH मान 5.5 से 6.8 होना चाहिए। यदि मिट्टी में जल निकास अच्छा हो तो उत्पादन भी उत्तम होता है।

किस्में

भारत में मूली की कई प्रजातियाँ उपलब्ध हैं, जिन्हें मौसम और क्षेत्र के अनुसार बोया जाता है।

1. **देशी किस्में** – पूसा देशी, पूसा हिमानी, पूसा चकड़ा।
2. **सुधारित किस्में** – पूसा चेतकी, पूसा हिमानी, पूसा रश्मि, पूसा हंस, जापानी व्हाइट।
3. **गर्मी की किस्में** – पूसा चेतकी, जापानी व्हाइट गर्मी की स्थिति में उपयुक्त रहती हैं।
4. **सर्दी की किस्में** – पूसा हिमानी और पूसा रश्मि ठंडे मौसम के लिए उपयुक्त हैं।

भूमि की तैयारी

मूली की खेती से पहले खेत की गहरी जुताई कर मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिए। उसके बाद 2–3 बार हल्की जुताई करके पाटा लगाना चाहिए ताकि मिट्टी अच्छी तरह से तैयार हो जाए। खेत में पर्याप्त मात्रा में सड़ी हुई गोबर की खाद (20–25 टन/हे.) मिलाना लाभकारी होता है। इसके अलावा बेड और नालियाँ बनाकर बुवाई करनी चाहिए जिससे सिंचाई एवं जल निकासी में सुविधा हो।

बीज दर और बुवाई का समय

- **बीज दर** – एक हेक्टेयर क्षेत्र में 8–10

विशाल पाल[*], कुमारी नेहा सिन्हा एवं मिथिलेश कुमार वर्मा

[1]पीएच.डी. बागवानी विभाग (सब्ज़ी विज्ञान), (सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय)

[2]सहायक प्रोफेसर डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय

[3]पीएच.डी. बागवानी विभाग (सब्ज़ी विज्ञान), (सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय)

किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है।

- **बुवाई का समय** –
  - उत्तर भारत में खरीफ और रबी दोनों मौसम में बुवाई होती है।
  - खरीफ की बुवाई जुलाई–अगस्त में।
  - रबी की बुवाई अक्तूबर–नवंबर में।
  - ग्रीष्मकालीन बुवाई मार्च–अप्रैल में की जाती है।
- बीज को कतारों में 30 सेमी की दूरी और पौधों में 8–10 सेमी की दूरी पर बोया जाता है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

मूली की बेहतर पैदावार के लिए संतुलित खाद एवं उर्वरकों का उपयोग आवश्यक है।

- गोबर की खाद – 20–25 टन/हे.
- नत्रजन – 100 किग्रा/हे.
- फास्फोरस – 60 किग्रा/हे.
- पोटाश – 40 किग्रा/हे.

बुवाई से पहले पूर्ण मात्रा में फास्फोरस और पोटाश तथा नत्रजन की आधी मात्रा मिलानी चाहिए। शेष नत्रजन टॉप ड्रेसिंग के रूप में दो बार देना चाहिए।

सिंचाई

मूली की फसल को निरंतर नमी की आवश्यकता होती है।

- पहली सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद करनी चाहिए।
- इसके बाद 7–10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए।
- अधिक सिंचाई से जड़ें फट जाती हैं, अतः जल प्रबंधन का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

निराई-गुड़ाई एवं थिनिंग

अंकुरण के 8–10 दिन बाद पौधों की छटाई (थिनिंग) करके आवश्यक दूरी पर पौधे रखे जाते हैं। निराई-गुड़ाई समय-समय पर करके खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए।

कीट एवं रोग प्रबंधन

1. **कीट** –
   - पत्तागोभी की तितली एवं एफिड्स मूली पर आक्रमण करते हैं।
   - नियंत्रण हेतु नीम का तेल या अनुशंसित कीटनाशक का प्रयोग करना चाहिए।
2. **रोग** –
   - डाउनि मिल्ड्यू, पाउडरी मिल्ड्यू और आल्टरनेरिया ब्लाइट प्रमुख रोग हैं।
   - रोग नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम या मेन्कोजेब का छिड़काव करना चाहिए।

फसल की कटाई

मूली की फसल बोने के 40–60 दिनों बाद कटाई योग्य हो जाती है।

- जल्दी पकने वाली किस्में 30–35 दिन में तैयार हो जाती हैं।
- कटाई में देरी करने पर मूली की जड़ें कठोर और रेशेदार हो जाती हैं।
- मूली की जड़ों को सावधानीपूर्वक उखाड़कर पत्तियाँ काट दी जाती हैं।

उपज

उपज किस्म, मौसम और प्रबंधन पर निर्भर करती है।

- अच्छी किस्म और उचित देखभाल से 250–300 क्विंटल/हे. उपज प्राप्त की जा सकती है।

भंडारण

मूली को अधिक समय तक भंडारित करना कठिन होता है क्योंकि यह शीघ्र मुरझा जाती है। ताजी मूली को गीली बोरी या रेफ्रिजरेटेड स्थान पर कुछ दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

आर्थिक महत्व

मूली एक नकदी फसल है, जिसे कम समय और कम लागत में उगाया जा सकता है। किसानों को 40–60 दिनों में बाजार हेतु तैयार फसल मिल जाती है। इसका बाजार मूल्य अच्छा रहता है, जिससे किसानों को लाभ मिलता है।

औषधीय गुण

- मूली पाचन शक्ति बढ़ाती है और कब्ज दूर करती है।
- इसमें सल्फर यौगिक होते हैं जो कैंसर-रोधी गुण प्रदान करते हैं।
- यह रक्तचाप नियंत्रित करने और यकृत (लिवर) को स्वस्थ रखने में सहायक है।

निष्कर्ष

मूली एक अल्पावधि, पोषक एवं लाभकारी सब्जी है। उचित जलवायु, किस्म, उर्वरक और प्रबंधन के साथ इसकी खेती करके किसान अल्प समय में अधिक उत्पादन और आय प्राप्त कर सकते हैं। मूली न केवल पोषण का स्रोत है, बल्कि इसका औषधीय महत्व भी अत्यधिक है। इसलिए मूली की खेती किसानों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी तथा उपभोक्ताओं के लिए स्वास्थ्यवर्धक सिद्ध होती है।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE